20/04/2024

शामिल विषय (TOPICS COVERED)

1. **स्थायी स्थिति (20 अप्रैल) (GS PAPER II: IR)**
2. **आने वाली सरकार के लिए वैज्ञानिक और एक इच्छा सूची (20 अप्रैल) (GS PAPER III: S&T)**
3. **आदिवासी पहचान पर लड़ाई (20 अप्रैल) (GS PAPER I: समाज, आधुनिक भारत का इतिहास)**

PatriotIAS

स्थायी स्थिति (Permanent Status) (20 अप्रैल) (GS PAPER II: आईआर)

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC)

- **संयुक्त राष्ट्र** का एक केंद्रीय अंग बनाते हुए, अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने का आरोप लगाया गया ।
- **प्राधिकरण की शक्ति:** यूएनएससी **शांति मिशनों को अधिकृत कर सकता है, प्रतिबंध लगा सकता है और यहां तक कि सैन्य बल के उपयोग को भी अधिकृत कर सकता है।** शांति के लिए खतरों को संबोधित करने के लिए।

संघटन:

- **15 सदस्य:**
  - पांच स्थायी सदस्य:
    - चीन
    - फ्रांस
    - रूस
    - यूनाइटेड किंगडम
    - संयुक्त राज्य
  - **दस गैर-स्थायी सदस्य:** क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के आधार पर संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा दो साल के लिए चुना गया।

महत्वपूर्ण कार्यों

- **विवादों की जाँच करना:** उन स्थितियों की जाँच करना जो अंतर्राष्ट्रीय अशांति का कारण बन सकती हैं।
- **शांतिरक्षा मिशन:** संघर्ष क्षेत्रों में शांति बनाए रखने या बहाल करने में मदद करने के लिए शांतिरक्षा अभियानों की स्थापना और देखरेख करता है।
- **प्रतिबंध:** अपने संकल्पों को लागू करने के लिए आर्थिक, राजनयिक या सैन्य प्रतिबंध लगा सकता है।

- **बल का उपयोग:** शांति के लिए आक्रामकता या खतरों का सामना करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों द्वारा बल के उपयोग को अधिकृत करता है।
- **सुरक्षा परिषद सुधार:** परिषद की सदस्यता संरचना और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सुधार के बारे में चल रही चर्चा।

निर्णय लेना

- **संकल्प:** ठोस मामलों पर निर्णय के लिए नौ सकारात्मक वोटों की आवश्यकता होती है।
- **वीटो शक्ति:** प्रत्येक स्थायी सदस्य के पास वीटो शक्ति होती है, जिसका अर्थ है कि एक भी "नहीं" वोट महत्वपूर्ण मामलों पर किसी प्रस्ताव को रोक सकता है, भले ही उसे बहुमत का समर्थन प्राप्त हो।

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) ने फिलिस्तीन को संयुक्त राष्ट्र में पूर्ण सदस्य का दर्जा देने के एक प्रस्ताव पर विचार किया।
- यह प्रस्ताव **अल्जीरिया द्वारा प्रस्तावित किया गया था।**
- इसका उद्देश्य **1947 में किए गए वादे को पूरा करना था जब संयुक्त राष्ट्र महासभा ने फिलिस्तीन को दो राज्यों में विभाजित किया था: एक यहूदी और एक अरब।**
- 1949 में केवल इज़राइल ही संयुक्त राष्ट्र का पूर्ण सदस्य बना।
- फ़िलिस्तीन वर्षों से पूर्ण सदस्यता की मांग कर रहा है, जिसे 2012 में स्थायी पर्यवेक्षक का दर्जा प्राप्त हुआ था।
- इस प्रस्ताव को यूएनएससी के 15 में से 12 सदस्यों ने समर्थन दिया।
- हालाँकि, **संयुक्त राज्य अमेरिका ने प्रस्ताव पर वीटो कर दिया।**
- अमेरिका ने तर्क दिया कि फ़िलिस्तीन की सदस्यता पार्टियों के बीच सीधी बातचीत के माध्यम से हासिल की जानी चाहिए।
- इजरायली **राजद्वूत** प्रस्ताव की आलोचना की, विशेषकर हमास द्वारा हाल के आतंकवादी हमलों के बाद, यह कहते हुए कि यह अपराधों को पुरस्कृत करेगा।
- फ़िलिस्तीनियों के ख़िलाफ़ इज़रायल की सैन्य कार्रवाइयों से जुड़ी हालिया घटनाएं फ़िलिस्तीन के अधिकारों को मान्यता देने की तात्कालिकता को उजागर करती हैं।
- संयुक्त राष्ट्र के युद्धविराम प्रस्ताव के बावजूद, इज़राइल ने सैन्य अभियान जारी रखा, जिससे फिलिस्तीन को वैश्विक मंच पर एक मजबूत आवाज की आवश्यकता का संकेत मिलता है।
- **इज़राइल के लिए अमेरिका के अटूट समर्थन पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए** , क्योंकि यह निष्पक्ष समाधान की दिशा में प्रगति में बाधा डालता है।
- यह तर्क कि फिलिस्तीन केवल बातचीत के माध्यम से राज्य का दर्जा प्राप्त कर सकता है, त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि इजरायली नेतृत्व ने फिलिस्तीनी राज्य के विचार को खारिज कर दिया है।
- **फ़िलिस्तीन के लिए संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता इसे अन्य देशों के समान मानकों पर रखेगी, जवाबदेही और शांति को बढ़ावा देगी।**
- निर्दोष नागरिकों की पीड़ा को नज़रअंदाज़ करते हुए, सभी फ़िलिस्तीनियों को आतंकवादी कृत्यों से जोड़ना अनुचित है।
- एक वैश्विक नेता के रूप में, संयुक्त राष्ट्र के संप्रभु समानता के सिद्धांत के अनुरूप, अमेरिका को एक देश का पक्ष लेने के बजाय आम सहमति बनाने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

आने वाली सरकार के लिए वैज्ञानिक और एक इच्छा सूची (20 अप्रैल) (GS PAPER III: एस एंड टी)

PatriotIAS

एक प्रमुख आर्थिक महाशक्ति बनने की भारत की खोज में विज्ञान और वैज्ञानिकों का समर्थन आवश्यक है

- भारत में चल रहे आम चुनाव पर वैज्ञानिकों की पैनी नजर है।
- उनके पास पांच प्रमुख मुद्दे हैं जिन्हें वे नई सरकार और निर्वाचित प्रतिनिधियों से तत्काल संबोधित करना चाहते हैं:
    - वैज्ञानिक अनुसंधान निधि.
    - शिक्षा एवं कौशल विकास.
    - पर्यावरण संरक्षण।
    - सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना.
    - विज्ञान आधारित नीति निर्माण।

खर्च बढ़ाएँ

- अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) पर देश के सकल घरेलू व्यय में वृद्धि महत्वपूर्ण है।
- **अनुसंधान एवं विकास** पर वर्तमान व्यय सकल घरेलू उत्पाद के 0.7% से कम है।
- सरकारी और निजी खिलाड़ी अनुसंधान एवं विकास व्यय में योगदान करते हैं, जिसमें निजी योगदान 40% से कम है।
- **अगले पांच वर्षों में** अनुसंधान एवं विकास पर सरकारी खर्च में साल-दर-साल कम से कम 50% की वृद्धि होनी चाहिए ।
- **आने वाली सरकार के कार्यकाल के अंत तक जीडीपी को लगभग 4%** तक पहुंचाने का लक्ष्य ।
- अनुसंधान एवं विकास पर निजी क्षेत्र का खर्च **अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (एएनआरएफ) जैसे तरीकों से बढ़ सकता है।**
- विस्तृत योजनाओं का कार्यान्वयन और वित्त पोषण आश्वासन के लिए तंत्र की स्थापना आवश्यक है।
- विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों सहित सार्वजनिक क्षेत्र के संस्थानों के भौतिक और बौद्धिक बुनियादी ढांचे में सुधार की आवश्यकता है।
- **विज्ञान प्रयोगशालाओं का आधुनिकीकरण** कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में यह आवश्यक है।
- छात्रों और वैज्ञानिकों **के लिए बेहतर बुनियादी ढाँचा प्रदान करना महत्वपूर्ण है।**
- **अधिक गुणवत्ता वाले शिक्षकों और शोधकर्ताओं को नियुक्त करना** स्वीकृत पदों को भरने के लिए आवश्यक है।
- अगले पाँच वर्षों में शिक्षकों और शोधकर्ताओं की संख्या को प्रभावी ढंग से दोगुना करने की आवश्यकता है।
- **एक मजबूत और निष्पक्ष प्रणाली** विज्ञान में प्रतिभा को काम पर रखना और उसे बढ़ावा देना आवश्यक है।

योग्यता पर ध्यान दें

- **शैक्षिक और अनुसंधान संस्थानों में भर्ती प्रक्रियाओं का मानकीकरण** विश्व स्तर पर आवश्यक है.
- नियुक्ति मानदंड पूरी तरह से योग्यता पर आधारित होने चाहिए।
- **सक्षम समितियाँ** बाहरी प्रभाव से मुक्त उम्मीदवारों के चयन के लिए जिम्मेदार होना चाहिए।
- **छह माह के अंदर नियुक्ति पत्र उपलब्ध कराया जाए** आवेदन के समय से.

PatriotICIAS

- गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों और वैज्ञानिकों को नियुक्त करने के लिए स्थापित वैश्विक मानदंडों का पालन करना महत्वपूर्ण है।
- एक मजबूत **विज्ञान अनुदान प्रबंधन प्रणाली लागू करना** आवश्यक है।
- सिस्टम को अनुदान जमा करने में लालफीताशाही को कम करना चाहिए और अनुदान और छात्र फेलोशिप का समय पर वितरण सुनिश्चित करना चाहिए।
- हार्ड कॉपी जमा करना समाप्त किया जाना चाहिए।
- **वैज्ञानिकों को यह तय करने में स्वायत्तता होनी चाहिए कि वे अपने शोध कोष को कैसे खर्च करें।**
- विज्ञान मंत्रालयों के विभागों को प्रत्येक वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पहले अपना आवंटित बजट खर्च करना चाहिए।
- **खरीदारी में लचीलापन** सरकार के ई-मार्केटप्लेस के अलावा अन्य स्रोतों की आवश्यकता है।
- **सामान्य वित्तीय नियमों से भटकने की अनुमति दी** जानी चाहिए जब आवश्यक हो।
- जवाबदेही उपायों से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि आवश्यक शोध सामग्री पर धन प्रभावी ढंग से खर्च किया जाए।

स्वतंत्रता सुनिश्चित करें

- वैज्ञानिक बिना किसी हस्तक्षेप के साक्ष्य के आधार पर अपने निष्कर्ष व्यक्त करने की स्वतंत्रता चाहते हैं।
- एक **समृद्ध स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र** शिक्षा क्षेत्र में नवाचार के लिए आवश्यक है।
- सरकारों ने **भारतीय परिसरों में नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा दिया है** , लेकिन सच्चे नवाचार के लिए वैज्ञानिकों के लिए पूर्ण स्वायत्तता की आवश्यकता होती है।
- स्वायत्तता में कंपनी बनाने के लिए छुट्टी लेने, अत्यधिक कागजी कार्रवाई के बिना वैज्ञानिक कर्मचारियों को नियुक्त करने और अनुसंधान निधि को स्वायत्त रूप से खर्च करने की क्षमता शामिल है।
- **राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में यात्रा करने की भी स्वतंत्रता** होनी चाहिए ।
- जवाबदेही उपायों से युवा दिमागों को प्रदान किए जाने वाले विज्ञान, उत्पादों और ज्ञान की गुणवत्ता सुनिश्चित होनी चाहिए।
- 2050 तक दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के भारत के लक्ष्य के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान करने में आसानी में सुधार की आवश्यकता है।
- सरकार को **नवाचार और उद्यमिता का समर्थन करने के साथ-साथ मौलिक विज्ञान और ज्ञान सृजन में निवेश करना चाहिए।**
- वैज्ञानिक एक महत्वपूर्ण चुनावी ब्लॉक का प्रतिनिधित्व करते हैं जो व्यापक सार्वजनिक हित के लिए निर्णय लेने को प्रभावित कर सकता है।

PatriotIAS

आदिवासी पहचान पर लड़ाई (20 अप्रैल) (GS PAPER I: समाज, आधुनिक भारत का इतिहास)

भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार राष्ट्रवादी आदिवासी पहचान बनाने के लिए आदिवासी प्रतिरोध आंदोलनों की खोई हुई कहानियों को "पुनः प्राप्त" करने के लिए कई प्रयास कर रही है। यह मानते हुए कि आदिवासी पहचान को संघ परिवार

द्वारा हथियाया जा रहा है, राजस्थान और झारखंड के स्वदेशी समुदाय इन आख्यानों का मुकाबला करने का प्रयास कर रहे हैं, अभिनय लक्ष्मण की रिपोर्ट

- राजस्थान के उदयपुर, बांसवाड़ा और डूंगरपुर के आदिवासी इलाकों में **भील आदिवासी लोगों की बस्तियों की ओर जाने वाले धूल भरे राजमार्गों पर साइनबोर्ड दिखाई दे रहे हैं।**
- **16वीं सदी के आदिवासी प्रतीक राणा पुंजा भील** का चित्रण होता है , निवासियों को "आदिवासी परिवार" या आदिवासी परिवार के हिस्से के रूप में दर्शाते हैं।
- "आदिवासी परिवार" को एक बड़ी विचारधारा के रूप में वर्णित किया गया है जिसका उद्देश्य इन बस्तियों में लोगों की अंतरात्मा को जागृत करना है।
- विधायक राजकुमार रोत द्वारा सितंबर 2023 में गठित भारत आदिवासी पार्टी इस आंदोलन से जुड़ी है.
- भारत आदिवासी पार्टी के 27 वर्षीय कार्यकर्ता अमित खराड़ी बताते हैं कि हाल के वर्षों में निवासियों ने खुद ही ये साइनबोर्ड लगाना शुरू कर दिया है, जो आंदोलन में जमीनी स्तर की भागीदारी का संकेत देता है।

अनेक आख्यान

- भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) भील आदिवासी लोगों के लिए एक अलग भील राज्य की मांग से उभरी।
- पार्टी के वरिष्ठ नेता भंवरलाल परमार कहते हैं कि पार्टी का मिशन आदिवासी पहचान से जुड़ी कहानी पर "नियंत्रण रखना" है।
- बीएपी का उद्भव आंशिक रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) से संबद्ध **अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के हमलों का सामना करने वाले आदिवासी समुदायों की प्रतिक्रिया में था।** और दशकों से इसके संघबद्ध संगठन।
- संघ परिवार द्वारा बनाई गई आदिवासी पहचान पर कथाएँ अब राष्ट्रवादी आदिवासी पहचान बनाने के लिए आदिवासी प्रतिरोध आंदोलनों की खोई हुई कहानियों को पुनः प्राप्त करने के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के प्रयासों के साथ विलय हो रही हैं।
- राष्ट्रीय **अनुसूचित जनजाति आयोग** केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई इस परियोजना का नेतृत्व कर रही है, **जिसका लक्ष्य आदिवासी इतिहास, समुदायों और प्रतिरोध आंदोलनों पर मौजूदा साहित्य को स्वदेशी लोगों द्वारा अपने समुदायों के बारे में बनाए गए साहित्य से बदलना है।**
- बीएपी इस पहल को सरकार द्वारा उनकी पहचान के विनियोजन के रूप में देखता है।
- 27 साल के अमित खराड़ी संसाधनों की कमी के बावजूद नवंबर 2023 में राजस्थान विधानसभा चुनाव में 40,000 वोट हासिल करने के लिए "आदिवासी परिवार" की अवधारणा को जिम्मेदार मानते हैं।
- खराडी ने आदिवासी समुदाय के इतिहास को संरक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डाला, और चिंता व्यक्त की कि उनके पदचिन्हों को मिटाया जा रहा है, और उनके इतिहास को नकारा जा रहा है।
- दक्षिणी राजस्थान के भील बेल्ट में "आदिवासी परिवार" घोषित करने वाले साइनबोर्ड लगाए जा रहे हैं, जो आदिवासी पहचान और इतिहास को पुनः प्राप्त करने के लिए एक जमीनी स्तर के आंदोलन को दर्शाता है।
- आदिवासी मतदाताओं के लिए भाजपा का अभियान आदिवासी समुदायों के भूले हुए नायकों को पहचानने और सम्मान देने के सरकार के प्रयासों पर जोर देने के लिए पुंजा भील और गोविंद गुरु जैसे नेताओं की छवि का उपयोग करता है।

PatriotIAS

- खराड़ी सतही इशारों के लिए भाजपा और आरएसएस की आलोचना करते हैं, उन्हें "लॉलीपॉप" कहते हैं और **"आदिवासी" के बजाय "वनवासी" और "जनजाति" जैसे शब्दों के उनके निरंतर उपयोग पर सवाल उठाते हैं।**
- उनका तर्क है कि **आदिवासी पहचान हिंदू धर्म से पहले की है** और मुख्यधारा की कहानियों में गोविंद गुरु जैसी शख्सियतों के चित्रण पर असंतोष व्यक्त करते हैं।

बीजेपी के लिए एक हथियार

- 15 नवंबर को, जो आदिवासी प्रतीक बिरसा मुंडा की जयंती है, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव प्रचार के बीच में थे।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड के उलिहातु में बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम में भाग लिया, जहां उन्होंने सरकारी परियोजनाओं का उद्घाटन किया और भीड़ को संबोधित किया।
- मोदी ने आजादी के बाद से भारत के स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नायकों को मान्यता न मिलने पर अफसोस जताया और आजादी का अमृत महोत्सव पहल द्वारा उनकी कहानियों को साझा करने के अवसर पर प्रकाश डाला।
- भूमि की रक्षा में उनकी भूमिका पर जोर देते हुए **बिरसा मुंडा, तिलका मांझी, रानी दुर्गावती और अल्लूरी सीताराम राजू** जैसे "आदिवासी योद्धाओं" के योगदान को स्वीकार किया।
- मोदी ने विशेष रूप से 1913 में राजस्थान के मानगढ़ नरसंहार में गोविंद गुरु के बलिदान का उल्लेख किया।
- मोदी की टिप्पणी से पहले, भाजपा के अनुसूचित जनजाति मोर्चा ने गोविंद गुरु की एक तस्वीर उनके संघर्ष के विवरण के साथ एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर पोस्ट की थी, जो राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नेताओं के योगदान नामक पुस्तक में प्रकाशित जानकारी से मिलती जुलती थी।
- भाजपा **"स्वतंत्रता संग्राम में आदिवासी नेताओं का योगदान" नामक पुस्तक का उपयोग ब्रिटिश शासन से पहले भारत की राजनीति में आदिवासियों को समान भागीदार के रूप में स्थापित करने के लिए कर रही है।**
- भाजपा अनुसूचित जनजाति मोर्चा ने गोविंद गुरु के बारे में पोस्ट करते हुए उन्हें भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक महत्वपूर्ण आंदोलन का नेता बताया।
- गोविंद गुरु को **गले में रुद्राक्ष माला (दिव्य माला) के साथ एक सफेद कुर्ता पहने हुए दिखाया गया था,** उनकी नेतृत्वकारी भूमिका का प्रतीक है।
- पोस्ट में 20 वर्षों तक ब्रिटिश शासन के खिलाफ गोविंद गुरु की लड़ाई और स्व-शासन स्थापित करने की उनकी इच्छा पर प्रकाश डाला गया, जिसमें "संप सभा" नामक एक सभा के दौरान मानगढ़ में उनके भील अनुयायियों के नरसंहार का उल्लेख किया गया था।
- विद्वानों का काम मानगढ़ नरसंहार की तारीख के पोस्ट के चित्रण और मानगढ़ किले में गोविंद गुरु की उपस्थिति के कारण का खंडन करता है।
- विजय कुमार वशिष्ठ के शोध के अनुसार, ईडर साम्राज्य के शासक ने गोविंद गुरु के उपदेश के कारण बांसवाड़ा, डूंगरपुर और सुंथ राज्यों के भीलों के बीच उनके प्रभाव को कम करने के लिए उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयास किया।
- **गोविंद गुरु की शिक्षाओं में सामाजिक पदानुक्रम को चुनौती देते हुए तर्कसंगतता, अंधविश्वास से दूर रहने, एकेश्वरवाद और उच्च हिंदू जातियों के साथ समानता पर जोर दिया गया।**

PatriotICIAS

- उन्होंने एक ऐसे धर्म की वकालत की जिसमें धूनी (अग्निकुंड) में पूजा करना, रुद्राक्ष की माला पहनना और रविवार को विशेष पूजा के साथ लोहे का चिमटा ले जाना शामिल है।
- गोविंद गुरु ने प्रचलित सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देते हुए अपने अनुयायियों को खुद को उच्च हिंदू जातियों के बराबर मानने के लिए प्रोत्साहित किया।
- बीएपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास के सहायक प्रोफेसर जितेंद्र मीना, सरकारी छवि में गोविंद गुरु को रुद्राक्ष पहने हुए चित्रित करने की आलोचना करते हैं।
- मीना इस बात पर जोर देते हैं कि गोविंद गुरु की लड़ाई ऊंची जाति के शासकों द्वारा थोपी गई जाति-आधारित सामाजिक संरचना के खिलाफ थी, न कि केवल रुद्राक्ष की माला पहनने के बारे में।
- उनका तर्क है **कि गोविंद गुरु ने सामाजिक प्रतिबंधों से मुक्त होने और आदिवासी समुदाय के लिए एक नई सामाजिक व्यवस्था बनाने के लिए लड़ाई लड़ी।**
- एक आदिवासी शोधकर्ता और भारतीय इतिहास कांग्रेस और राजस्थान इतिहास कांग्रेस जैसे अकादमिक निकायों के सदस्य के रूप में, मीना व्यक्तिगत रूप से आदिवासी नेताओं पर सरकार की कहानियों का मुकाबला करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
- वह कम से कम एक दर्जन आदिवासी नेताओं के बारे में सरकार द्वारा प्रचारित कहानियों का विश्लेषण और विश्लेषण करने पर काम कर रहे हैं।
- मीना आदिवासी सुधारकों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालती हैं, जिनमें उपनिवेशवादी प्रशासन, जमींदारों और मिशनरियों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक दबाव भी शामिल हैं।
- वह स्वीकार करते हैं कि कुछ आदिवासी सुधारकों ने एक-दूसरे से प्रेरणा ली होगी, लेकिन उनके सामूहिक प्रयास का उद्देश्य उनके समुदायों के लिए कुछ नया स्थापित करना था।

ग़लतबयानी के ख़िलाफ़ लड़ना

- झारखंड के सरना विचारक और आध्यात्मिक नेता बंधन तिग्गा लगभग एक दशक से अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम का विरोध कर रहे हैं।
- **तिग्गा का कहना है कि आदिवासियों का विशिष्ट धर्म सरना, अन्य सभी धर्मों से पुराना है और बिरसा मुंडा जैसे आंदोलनों का उद्देश्य आदिवासी समुदायों के लिए विशिष्ट सामाजिक व्यवस्था बनाना था।**
- वह वनवासी कल्याण आश्रमों की आलोचना करते हैं, क्योंकि वे जनजातीय गांवों में हिंदू मंदिर बनाने के लिए अभियान चलाते हैं, जिसके साथ अक्सर लोगों को शिक्षा भी दी जाती है।
- झारखंड में केन्द्रीय सरना समिति के कार्यकर्ता हांडू भगत कहते हैं कि **संघ परिवार आदिवासियों को यह समझाने का प्रयास कर रहा है कि हिंदू और आदिवासी रीति-रिवाज एक जैसे हैं, और इस प्रक्रिया में बिरसा मुंडा जैसे नेताओं की कहानियों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है।**
- भगत सुगाकट्टा जैसे गांवों की ओर इशारा करते हैं, जहां वनवासी कल्याण केंद्र ने एक हनुमान मंदिर बनाया है, जिससे पारंपरिक आदिवासी धर्म और हिंदू धर्म के बीच अंतर धुंधला हो गया है।
- झारखंड स्थित लेखिका और पत्रकार जैकिंटा केरकेट्टा इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि आदिवासी नेताओं को अक्सर ब्रिटिश और मुगलों से लड़ने वाले के रूप में चित्रित किया जाता है, जबकि ब्रिटिशों के लिए काम करने वाले हिंदू जमींदारों और साहूकारों के खिलाफ उनके संघर्ष को नजरअंदाज कर दिया जाता है।
- **जैकिंटा केरकेट्टा ने ब्रिटिश और हिंदू जमींदारों के खिलाफ आदिवासी संघर्ष के ऐतिहासिक संदर्भ पर प्रकाश डाला, जिसमें जमींदारों और साहूकारों द्वारा आदिवासी लोगों के शोषण पर जोर दिया गया।**

PatriotIAS

- वह **सिदो, कान्हू, चांद और भैरव भाइयों के नेतृत्व में संथाल लोगों के हूल आंदोलन का हवाला देती हैं, जो जमींदारों और साहूकारों के उत्पीड़न से असंतोष से उत्पन्न हुआ था।**
- यह आंदोलन एक पुलिस निरीक्षक की हत्या के साथ शुरू हुआ, जिसने एक ग्राम प्रधान को बंधक बना रखा था, जिससे व्यापक विद्रोह हुआ और बाद में ब्रिटिश सैन्य हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप कई आदिवासियों की मौत हो गई।
- रणेंद्र कुमार आदिवासी विद्रोहों के अध्ययन के लिए राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की पुस्तक के उपयोग की आलोचना करते हैं, इसे आदिवासी प्रतिरोध आंदोलनों की जटिलताओं को समझने के लिए परिचयात्मक और अपर्याप्त मानते हैं।
- कुमार का दावा है कि **अधिकांश आदिवासी प्रतिरोध आंदोलन उच्च जाति के जमींदारों और सामाजिक आधिपत्य बनाए रखने के लिए औपनिवेशिक प्रशासन के साथ सहयोग करने वाले स्थानीय शासकों के उत्पीड़न की प्रतिक्रिया थे।**
- वह जाति संरचनाओं के प्रति आदिवासियों के प्रतिरोध को पहचानने के महत्व पर जोर देते हैं **और स्वीकार करते हैं कि प्रतिरोध ने अक्सर ब्रिटिश प्रशासन को निशाना बनाया, लेकिन इसने जमींदारों और शासकों द्वारा जारी सामाजिक अन्याय को भी संबोधित किया।**
- केरकेट्टा इस बात पर जोर देते हैं कि आजादी के बावजूद आदिवासी लोगों को उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है, और उन्हें सत्तारूढ़ सरकार की परवाह किए बिना दमनकारी व्यवस्था का शिकार बताया।

PatrioticIAS